



GOVERNMENT NAVEEN COLLEGE BORI

BORI, DIST- DURG, [C.G.], INDIA, 491001

NAAC ACCREDITED B GRADE

AFFILIATED TO HEMCHAND YADAV UNIVERSITY, DURG (C.G.)



कार्यालय प्राचार्य

शासकीय नवीन महाविद्यालय—बोरी, जिला—दुर्ग (छ.ग.)

NAAC Accredited “B” Grade

www.govtcollegebori.com

Email-govtcollegebori@gmail.com

College Code - 1609

चार दिवसीय कार्यशाला - The blossom Boutique

शासकीय नवीन महाविद्यालय बोरी में दिनांक 3 दिसंबर 2025 से 6 दिसंबर 2025 तक चार दिवसीय कार्यशाला “The blossom Boutique” का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यशाला वनस्पति विज्ञान विभाग एवं इको क्लब के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुई। कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों को वनस्पति विज्ञान के व्यावहारिक, नवाचारी एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़े पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. कमर तलत द्वारा की गई। कार्यशाला की संयोजक डॉ. संगीता शर्मा रहीं, जिनके कुशल मार्गदर्शन में कार्यशाला का संचालन अत्यंत सफलतापूर्वक किया गया। कार्यशाला में महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विषय के विद्यार्थियों के साथ-साथ इको क्लब के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इस कार्यशाला की सबसे विशेष और नवाचारी विशेषता यह रही कि इसमें बोनसाई बनाने से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ बाहरी विशेषज्ञों के बजाय महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्रों द्वारा स्वयं सिखाई और प्रदर्शित की गईं। इससे सहभागिता, आत्मनिर्भरता एवं सहयोगात्मक शिक्षण को बढ़ावा मिला।

कार्यशाला के प्रारंभ में छात्रों एवं प्राध्यापकों ने मिलकर बोनसाई की अवधारणा, उसका ऐतिहासिक महत्व, पर्यावरणीय उपयोगिता तथा सौंदर्यात्मक पक्ष पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात चरणबद्ध तरीके से बोनसाई निर्माण की प्रक्रिया समझाई गई, जिसमें उपयुक्त पौधे का चयन, गमले की तैयारी, मिट्टी का मिश्रण, जड़ों की छंटाई, तारों द्वारा शाखाओं को आकार देना तथा नियमित देखभाल जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं। कार्यशाला के दौरान छात्रों ने स्वयं आगे बढ़कर प्रायोगिक प्रदर्शन (डेमोंस्ट्रेशन) किया, जबकि प्राध्यापकों ने उन्हें तकनीकी मार्गदर्शन, सुधारात्मक सुझाव एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया। इस सहभागिता से छात्रों में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और सीखने की रुचि का विकास हुआ।

कार्यशाला की प्रमुख गतिविधियाँ

विभागाध्यक्ष

व्यवस्थापक विज्ञान

चार दिवसीय कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया। प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित रहीं—


Principal
Govt. College, Bori
Dist.-Durg (C.G.)

Day-01

बोनसाई हेतु मिट्टी की तैयारी

इस कार्यशाला में बोनसाई पौधों हेतु उपयुक्त मिट्टी तैयार करने की विधि की जानकारी महाविद्यालय की छात्रा कुमारी तासु पटेल (बी.एससी. फाइनल) द्वारा व्यावहारिक रूप से दी गई। उन्होंने विभिन्न घटकों के मिश्रण द्वारा मिट्टी तैयार करने की प्रक्रिया को सरल ढंग से समझाया। इस अवसर पर उपस्थित छात्र-छात्राएँ अत्यंत उत्सुक एवं जिज्ञासु दिखाई दिए तथा उन्होंने प्रक्रिया को ध्यानपूर्वक सीखा।





Day-02

बोनसाई निर्माण प्रशिक्षण

इस कार्यशाला के दूसरे दिन महाविद्यालय की छात्रा कुमारी तासू पटेल बी.एससी. तृतीय वर्ष द्वारा विद्यार्थियों को बॉसाई कला की तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने बॉसाई पौधे तैयार करने की विधि, पौधों की कटाई-छँटाई, तार बाँधने की तकनीक तथा उचित देखभाल के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों में बॉसाई तकनीक से पौधे तैयार करने को लेकर विशेष उत्साह देखने को मिला। विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा बॉसाई निर्माण की कला को सीखने में गहरी रुचि दिखाई। यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



Day-03

ग्राफिटिंग (कलम लगाना)

कार्यशाला के तीसरे दिन महाविद्यालय के छात्र नूतन लाल साहू एवं पायल पटेल द्वारा पौधों में ग्राफिटिंग (कलम लगाना) की विधि को सरल एवं व्यावहारिक ढंग से समझाया गया। उन्होंने बताया कि ग्राफिटिंग एक महत्वपूर्ण वनस्पति प्रवर्धन तकनीक है, जिसके माध्यम से उत्तम गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन वाले पौधे तैयार किए जा सकते हैं। इस अवसर पर छात्रों ने जाम तथा गुलाब के पौधों में ग्राफिटिंग की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से करके दिखाया। उन्होंने पौधों के चयन तथा कट लगाने की विधि ग्राफिटिंग के बाद पौधे की देखभाल के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला में उपस्थित विद्यार्थियों ने इस प्रयोगात्मक प्रदर्शन को बड़े उत्साह के साथ देखा और तकनीक से संबंधित उपयोगी जानकारी प्राप्त की। यह सत्र विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध हुआ।



Day-04

कोकेडमा तकनीक

बिना गमले के पौधे उगाने की जापानी तकनीक कोकेडमा के बारे में महाविद्यालय की सहायक प्राध्यापक डॉ. मनीषा ठाकुर (रसायन शास्त्र) द्वारा बताया गया तथा विद्यार्थियों को कोकेडामा (Kokedama) विधि से पौधे तैयार करने की प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर डॉ. मनीषा ठाकुर ने कोकेडामा की अवधारणा, आवश्यक सामग्री तथा पौधे तैयार करने की चरणबद्ध विधि को सरल एवं रोचक ढंग से समझाया।

प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने स्वयं कोकेडामा पौधे तैयार किए, जिससे उनमें विशेष उत्साह एवं जिज्ञासा देखने को मिली। यह गतिविधि न केवल पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने वाली रही, बल्कि विद्यार्थियों के लिए एक नवीन एवं रचनात्मक अनुभव भी सिद्ध हुई। कार्यशाला का यह अंतिम दिवस अत्यंत सफल एवं प्रेरणादायक रहा।

गर्मी में मिट्टी की नमी बनाए रखने की विधियाँ

इस कार्यशाला के चौथे दिन बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थी श्री नूतन लाल साहू द्वारा गर्मी के मौसम में मिट्टी की नमी बनाए रखने की विभिन्न प्रभावी विधियों की जानकारी दी गई। उन्होंने मल्लिचंग, जैविक पदार्थों के उपयोग, उचित सिंचाई तकनीक एवं जल संरक्षण उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला, जिससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

वेस्ट वाटर बोतल से प्लांटर निर्माण

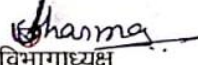
महाविद्यालय परिसर में पर्यावरण संरक्षण एवं पुनः उपयोग (Reuse) की भावना को बढ़ावा देने हेतु विद्यार्थियों द्वारा पुरानी प्लास्टिक बोतलों (वेस्टिवाटर बोतल) से

सुंदर एवं आकर्षक प्लांटर का निर्माण किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य प्लास्टिक अपशिष्ट के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के छात्रों ने अनुपयोगी प्लास्टिक बोतलों को एकत्रित कर उन्हें साफ किया तथा विभिन्न आकार-प्रकार में काटकर रंगों से सजाया। इन बोतलों को प्लांटर के रूप में रूपांतरित कर उनमें सजावटी एवं औषधीय पौधों का रोपण किया गया। विद्यार्थियों की रचनात्मकता एवं कलात्मकता इस कार्य में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। इस पहल से न केवल महाविद्यालय परिसर की सुंदरता में वृद्धि हुई, बल्कि छात्रों में “वेस्ट से बेस्ट” की भावना भी विकसित हुई। यह गतिविधि पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं सतत विकास की दिशा में एक सराहनीय प्रयास सिद्ध हुई। अंत में, यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण अनुभव रहा और भविष्य में भी ऐसे नवाचारपूर्ण कार्यों के लिए प्रेरणादायक बना।

समापन एवं निष्कर्ष

चार दिवसीय “दी ब्लॉसम बुटीक कार्यशाला” विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुई। इस कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों में न केवल वनस्पति विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित हुई। *इस कार्यशाला की सबसे विशेष और*

नवाचारी विशेषता यह रही कि इसमें बोनसाई बनाने से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ बाहरी विशेषज्ञों के बजाय महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्रों द्वारा स्वयं सिखाई और प्रदर्शित की गईं। इससे सहभागिता, आत्मनिर्भरता एवं सहयोगात्मक शिक्षण को बढ़ावा मिला। अंत में सभी प्रतिभागियों ने भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।


विभागाध्यक्ष
वनस्पति विज्ञान


Principal
Govt. College, Bori
Dist.-Durg (C.G.)

